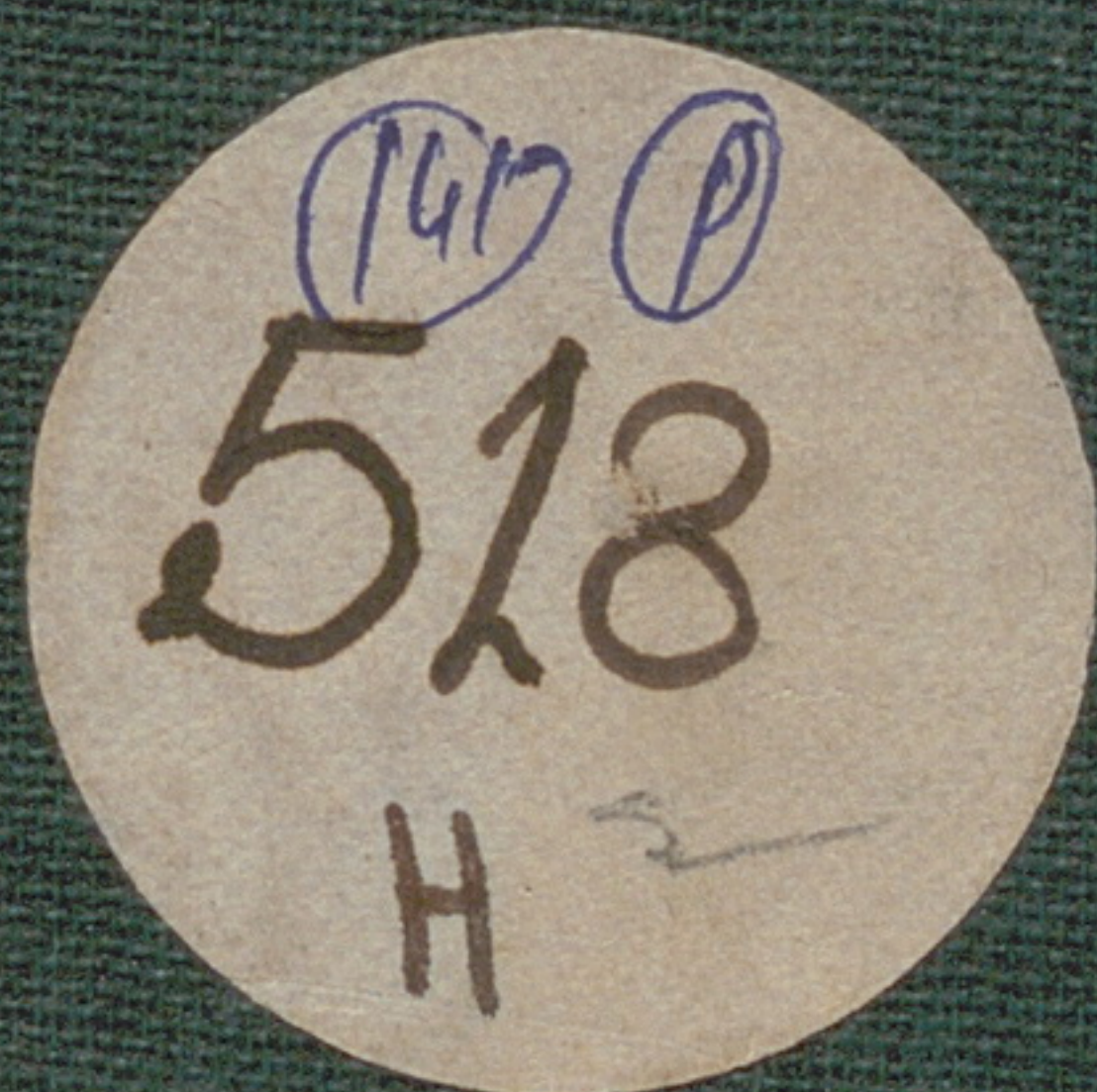




नई कजली
कजली बमकेस

उर्फ

भगतसिंह की फाँसी

संग्रहकर्ता तथा प्रकाशक--

पं० प्रभुनारायण मिश्र

स्टेशन रोड, गया ।

और

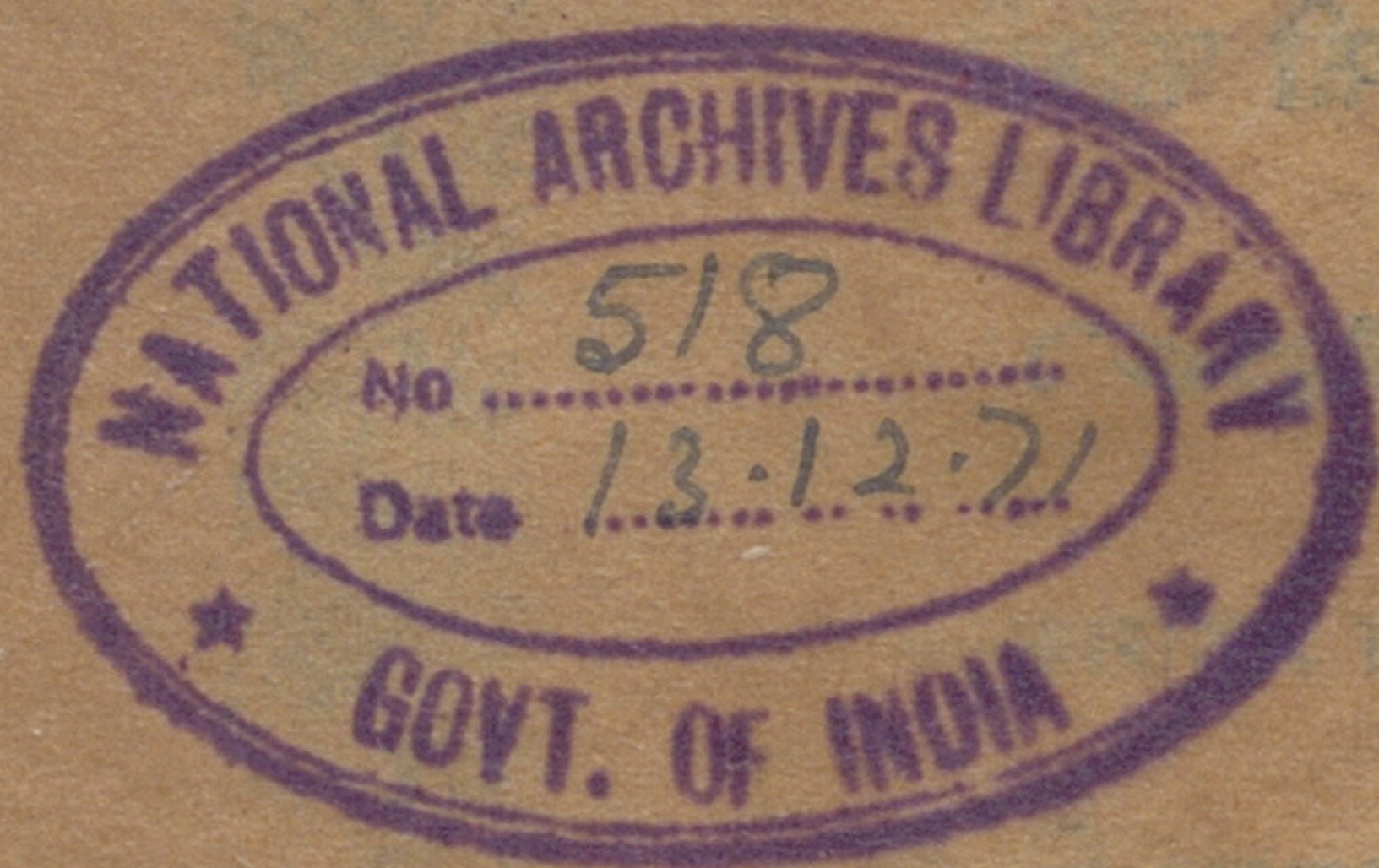
दशाश्वमेध, बनारस सिटी ।

प्रथमवार]

१९३१

[मूल्य -)

891.431
m 687 K



नई कजली
कजली बमकेस

उर्फ
भगतसिंह की फाँसी

संग्रहकर्ता तथा प्रकाशक--

पं० प्रभुनारायण मिश्र

स्टेशन रोड, गया ।

और

दशाश्वमेध, बनारस सिटी ।

प्रथमबार]

१९३१

[मूल्य -]

* वन्देमातरम् *

* कजली वमकेस *

उर्फ

भगतसिंह की फाँसी



कजरी

नइया पार करो भारत की आके कृष्ण मुरारी ना
बीच भंवर में कलपत है बिलकुल नर नारी ना
बिन तोरे दुख पर दुख सहते निस दिन भारी ना
एक बेर भारत को फिर से लेव उबारी ना
गोपाल कहते यही अरज हौ अबकी पारी ना

कजरी

पञ्जाब देश का शेर बबर मरदाना साँवर
 गोरिया ॥ हो गया भगतसिंह मुल्के अदम रवाना
 साँवर गोरिया ॥ टेक ॥ लायलपुर के बड़ा ग्राम में
 पैदा हुआ था ये नाहर । किशनसिंह का लड़का था
 तेइस चौबिस की रही उमर । रहा जात का सिक्ख
 खौफ वीरता का था उसके दिल पर । अंगरेजी
 एन्ट्रेन्स पास था मगर जेहन में था बढकर । वो
 इल्म बड़ा रखता था । ना किसी से भी डरता था ॥
 था अंगरेजी बोलने में पूरा दाना साँवर गोरिया ॥ १ ॥
 जब गांधी के आन्दोलन का इस भारत पर जोर
 हुआ । उसी समय इस भगतसिंह के दिल में ऐसा
 कोर हुआ । नौजवान एक सभा बना करके सब से
 एक ओर हुआ । लगा बड़ा खुरफात मचाने गौरमेन्द
 तक शोर हुआ । नित पुलिसों को धमकावे । ना
 खौफ किसी का खावे ॥ यह आजादी पर ऐसा
 हुआ दिवाना साँवर गोरिया ॥ २ ॥ देशभक्ति जब
 उबल पड़ी तो नाम पाया मस्ताने में । छपवा करके

परचा लाल चिपकाने लगा हर थाने में ॥ कहता था
 तुम होशियार हो जाओ रहो मेरे चेताने में । अगर
 करोगे जुल्म तो बाकी रखेंगे हम नहिं ढाने में ।
 हर वक्त यही कहता था । हर वक्त निडर रहता
 था ॥ हर रोज पुलिस वालों को था ममभाता
 साँवर गोरिया ॥ ३ ॥ भगतसिंह जो फेका था बम
 एसेम्बली की सुनो जिकर । बड़े बड़े अङ्गरेज मिटिंग
 में जुटे हुये थे आ आ कर । एसेम्बली के बैठक
 की जो भगतसिंह को मिली खबर । ले करके बम
 घुसा बेधड़क बचा पहरेवालों की नजर । बम फेक
 के ऐसा मारा । ना डर से किया किनारा ॥ बस
 इसी केस में पाया जेहलखाना साँवर गोरिया ॥ ४ ॥
 चला मुकादमा जोर शोर जब भगतसिंह गिरफ्तार
 हुआ । सरे अदालत भगतसिंह का इस तरह इजहार
 हुआ । कहा भगतसिंह इस भारत के बरबादी पर
 खार हुआ । करने को आजाद हिन्द यह भगतसिंह
 तैयार हुआ । ना खौफ हमे एक पलकी ॥ चाहे होय
 सजा डामल की ॥ है आजादी में डुबा हमारा बाना

साँवर गोरिया ॥ ५ ॥ इसी तरह का बयान जब हाकिम ने सब सुन पाया है । ताबे उम्र काले पानी की उसको सजा सुनाया है । फिर पीछे षड़यन्त्र केस लाहौर का जिसदम आया है । दिया हुक्म फाँसी का फिर तो जरा तरस नहिं खाया है । तारिख बाइस को भाई । फाँसी की सजा सुनाई ॥ हुआ मुकरर वक्त जान का जाना साँवर गोरिया ॥ ६ ॥ भगतसिंह के बाप किशनसिंह ने अपील फिर करवाई । लाट किये खारिज अपील क्या खूब गजब की दुखदाई । समझौते की अरबिन साहब ने जो आशा दिखलाई । तो फिर एक दरख्वास प्रजा मिल करके सब ने लगवाई । क्या खूब कर दिये राजी । करवा के धोखेबाजी ॥ ना तरस जरा भी उनके दिल में आना साँवर गोरिया ॥ ७ ॥ करवा करके गजब तेइस तारिख को सबको रोला दिया । सात बजे के वक्त साम को फाँसी उनको लगा दिय । राजगुरु सुखदेव भगतसिंह पर क्या आफत ढहा दिय ॥ चुपके से मट्टी का तेल छिरका पीछे

से जला दिया । क्या गजब किया अन्याई । नहिं
लाश किसी ने पाई ॥ क्या कहने को रह गया एक
अफसाना साँवर गोरिया ॥ ८ ॥ होत सबेरा
हिन्दुस्तान में शोर सुनो ततकाल हुआ । शोक छा
गया भारत में बस सभी जगह हरताल हुआ ।
समझौते के मोके पर अन्याय सभी को ख्याल
हुआ । हाथ सितम आजादी पर भारत का पूत
हलाल हुआ । क्या हुआ उपद्रव भारी । जो मरे
वीर बलधारी ॥ कहे मारकण्डे महाराज बना के
गाना साँवर गोरिया ॥ ९ ॥

कजरी

झण्डा तिनरंगा भारत में ऊँचा रहे हमारा ना ॥
इसी के बल पर होगा एक दिन विजय तुम्हारा ना ।
गांधी मोतीलाल जवाहिर का यह प्यारा ना ॥
रँग में बीरन के मन जोस बढ़ावन हारा ना ।
गोपाल कहते दुश्मन का नहिं चलता चारा ना ॥

कजरी

चारो तरफ आज भारत में गांधी का जस छाया है ॥
 सोते भारत को आकर के खूब जगाया है ।
 हो स्वतंत्र भारत मेरा ऐसा समझाया है ॥
 कांप उठे दुश्मन जब चरखा चक्र चलाया है ।
 गोपाल कहते अन्याई कानून मिटाया है ॥

कजरी

बढ़ो वीर भारत के फिर एक बार बारे बलमू ।
 सत्य धर्म का ले लेकर हथियार बारे बलमू ॥
 तनमन धन से किया खुशामद बार बार अपनाया हम ।
 लाज मुसीबत सर पर भेली समर में सर कटवाया हम ।
 जहां पसीना इनका गिरता पहिले खून बहाया हम ।
 डायर के हाथों से अपने बच्चों को मरवाया हम ।
 गमजरान हमने कीन्हा । हर तरह इन्हें सुख दीन्हा ॥
 ना किया कभी कोई बातों से इनकार बारे बलमू ॥
 हम इनका विश्वास करें ये हमसे करते चाल सुनो ।
 हमें दिलासा दे दे करके करते सदां हलाल सुनो ।

सब कुछ ढो ढो ले जाते कर भारत को कंगाल सुनो ।
 तड़पा कर दाना बिन हमको होते सदां निहाल सुनो ।
 हर तरह हमें कलपाते । अपने नित मौज उड़ाते ॥
 ये कुली कहें हम कहें इन्हें सरकार बारे बलमू ॥
 हम दो भाई मेल करैं ये फूट सदां डलवाते हैं ।
 लड़वा करके हम दोनों को अपना काम बनाते हैं ।
 जिन बातों से चिढ़ है मुझको वही सदां करवाते हैं ।
 करते हैं अन्याय न्याय का झूठा ढोंग दिखाते हैं ।
 सच कहने पर जुरबाना । तिस पर से जेहलखाना ॥
 मशीनगन गोली की सहते मार बारे बलमू ॥
 किया बहुत मिन्नत हमने पर रहम जरा नहीं आया है ।
 देख दशा भारत की गांधी सबको तुरत जगाया है ।
 स्वराज लेना चाहिये जल्दी हक अपना समझाया है ।
 सत्याग्रह संग्राम रोककर क्षणिक सन्धि करवाया है ।
 हम पर यह जुर्म मचावे । हम सब कुछ सहते जावे ॥
 है सत्य धर्म का सदा यही व्योहार बारे बलमू ॥
 एक होय कुल भारतवासी हो जाओ चटपट तड़्यार ।
 ऊंचा करदो झण्डा फिर से भारत का मेरे सरदार ।

तोप तमश्चा मसीनगन को देख न जाना हिम्मत हार ।
 पैर न पीछे धरना चाहे तनके टुकड़े होयँ हजार ।
 तन मन धन से लग जाओ । कुछ करके इन्हें दिखाओ ॥
 नाहीं तो दुश्मन मरिहैं खूब पछार बारे बलमू ॥
 जहाँ तक हो सकै स्वदेशी का घर घर प्रचार करो ।
 चलाओ चरखा मिलजुल के औ खहर का व्योहार करो ।
 सत्याग्रह संग्राम करो ना कोई से तकरार करो ।
 गुलामी का अब काटके बन्धन भारत का उद्धार करो ।
 बीरों भारत के नाते । यह रामदास सिखलाते ॥
 गोपाल कहते बड़े, चलो ललकार बारे बलमू ॥

कजली

हमरी लगी लगन चरखा से चरखारोज चलइबै ना ।
 सूत कात बढ़ियां सारी घरहीं बिनवइबै ना ॥
 बस्त्र विदेशी छूअब ना देशी अपनइबै ना ।
 धोती चादर पर फुलवर नई चाल छपइबै ना ॥
 गोपाल गांधी जी का जै जै कार मनइबै ना ।

कजरी

भुलनी झोंकदार हम पहिनब अबकी पारी सावन में ॥
 रहे स्वदेसी अंगिया चादर सारी सावन में ।
 बिन एतना नहिं हम करबै तैयारी सावन में ॥
 बहुत दिना से कहि कहि के हम हारी सावन में ।
 गोपाल पिया मत भूले बात हमारी सावन में ॥

कजरी

गोइयां कल सइयाँ से चरखा अब हमहूँ मंगवइबै ना ॥
 सांभ सवेरे औ दुपहरिया रोज चलइबै ना ।
 धोती चादर सूत कात के हम बिनवइबै ना ॥
 पहिर के कजरी में अबकी नइहरवां जइबै ना ।
 गोपाल मटरू कै कजरी सावन में गइबै ना ॥

कजरी

चरखा कातब गोइयां सइयाँ से मँगवाय के,
 गांधी क गुन गायके ना ॥ टेक ॥ रुई घरही पर

धुनवाके, कतबै सूत सखी मन लाके । साड़ी बिन-
 वइबै जेालहा के घर भेजवाय के, गांधी क गुन
 गाय के ना ॥ १ ॥ धोती पर बेल छपवइबै,
 चादर पर बूटी कढ़वइबै । फेंकबै माल बिदेशी
 अगिषा में जरवाय के, गाँधी क गुन गाय के ना
 ॥ २ ॥ सत्याग्रह में नाम लिखइबै, अपने भाइन
 के समझइबै । जे ना मानी भेजबै घर चूड़ी पहि-
 नाय के, गांधी क गुन गाय के ना ॥ ३ ॥ जेहल
 से ना तनिक डेरइबै, आगे बढ़के गोली खइबै ।
 हँस हँस प्राण गँवइबै भारत के हित जाय के,
 गांधी० ॥ भारत के आजाद बनइबै, अब ना गुलाम
 हम कहइबै । कहते गोपाल मटरू बार बार समझाय
 के गांधी क गुन गाय के ना ॥ ५ ॥

कजरी

बहिनों उठो उठो भारत को हम आजाद करावेंगी ॥
 डरपोकों के हाथ में हम चूड़ी पहिनावेंगी ।
 आजादी के लिये जुर्म सब सहते जावेंगी ॥

भर देंगी जेहल सीने पर गोली खावेंगी ।
गोपाल अब जालिम को कुछ करके दिखलावेंगी ॥

कजली

करते चलो जुल्म तुम हम पर हम तुमको समझावेंगे ॥
बढ़ा दिया जो कदम तो पोछे नहीं हटावेंगे ।
गन मशीन गोली डंडा से नहीं घबड़ावेंगे ॥
मरकर भी दुनियां को हम जीना सिखलावेंगे ।
गोपाल कहते चरखा चक्र चलाते जावेंगे ॥

कजली

फाँसी पड़के भगतसिंह सुरपुर किये सफरिया ।
खबरिया सुनि पवली बलमू ॥ राजगुरु भगतसिंह
सरदार, और सुखदेव ये तीनों यार ॥ फाँसी देहल
गइलन संभा के पहरिया ॥ खबरिया सुनि पवली
बलमू ॥ १ ॥ बीतल दीन भयल जब रात, सुनली
बजल रहल तब सात ॥ कुबेरा नाहीं देखलेस नउलेस
हाथ फाँसरिया । खबरिया सुनि पवली बलमू ॥ २ ॥

भारत भर हो गयल उदास, नाहीं देहलेस उनकर
 लाश । नाथ मट्टी कै तेल जरवा देहलस शरिरिया ।
 खबरिया सुनि पवली बलमू ॥ ३ ॥ मरे तीनों
 भारत आजाद, हाथ करतूत करी जब याद ।
 गोइयां रोय रोय के होले सुरुख नजरिया ॥ खब-
 रिया सुनि पवली बलमू ॥ ४ ॥ दिल से हम जैकार
 मनइबै, कजरी भगतसिंह कै गइबै ॥ गोइयाँ
 मारकण्डे शायर कै छपल कजरिया ॥ खबरिया सुनि
 पवली बलमू ॥ ५ ॥

कजरी

कहे थे गांधी मोतीलाल से धूम मचाइब चरखा
 से । खास ठनल अबकी भारत स्वाधीन बनाइब
 चरखा से ॥ टेक ॥ गिरल दशा भारत कै हौ भाइन
 के जगाइब चरखा से । घर घर में हम हिन्दुस्तान
 के सूत कताइब चरखा से । चली सुदर्शन चक्कू सूत
 कै ढेर लगाइब चरखा से । छीन अपन रोजगार लेब

अस काम देखाइव चरखा से । जगह दर जगह
 भारत में खहर बिनबाइव चरखा से ॥ १ ॥ भेल
 भेल के बिपत देहि पर जेहल जाइव चरखा से ।
 टरब न बैठव जेहल में उनके थरीइव चरखा से ।
 ठट के मांगव स्वराज उनसे काम चलाइव चरखा से ।
 ढेर करे जो अत्याचार तो उन्हें दबाइव चरखा से ॥ २ ॥
 तोड़ नमक कानून औ धरसाना लुटवाइव चरखा
 से । थकब न कबहीं गुलामी हम सब कर छोड़वाइव
 चरखा से । देखा के करतब जज कलेटर के अपनाइव
 चरखा से । धीरे धीरे माल बिदेशी सब रोकवाइव
 चरखा से । ना मनिहैं भारत में भीख उनसे मगवा-
 इव चरखा से ॥ २ ॥ पलटन तोप रिसाला सब कुछ
 पीछे हटाइव चरखा से । फूट बैर आपस कै छोड़ झन्डा
 फहराइव चरखा से । बड़े बड़े जेहल के धर्म शाला
 करवाइव चरखा से । भारत में कर बीर बुजदिलन
 के लड़वाइव चरखा से ॥ मोहनचन्द से गांधी आपन
 नाम धराइव चरखा से ॥ ३ ॥ यकीन करके बाटी
 कहत हम उन्हें छकाइव चरखा से । रखाके ताब हम

हिन्दुस्तान के स्वराज पाइब चरखा से । लड़ब न तोप
तमश्ना से हम उन्हें भगाइब चरखा से ॥ शकूर
कहते हरेक दर दङ्गल में गाइब चरखा से ॥ होगा
मारकण्डे स्वारज जब उनसे सटाइब चरखा से ॥ ५ ॥

कजरी

धन धन गांधी जी महाराज, रक्खा भारत मां
का लाज । काज दुसरे के भाई मोरे बालमुआ ॥
चिट्ठी लाट के ढिग भेजवाये, जवाब उसका ना
जब पाये । नमक कानून तोड़ाई मोरे बालमुआ ॥ २ ॥
था ६ अप्रैल रविवार, डाडी शिविर किया तैयार ।
जाके नमक बनाई मोरे बालमुआ ॥ ३ ॥ फिर तो
हुकुम दिया नीकार, पहुँचा देश देश में यार । अख-
वार में छपाई मोरे बालमुआ ॥ ४ ॥ काशी कलकत्ता
अजमेर, बम्बई, बाँदा जैसलमेर । काश्मीर को
लखाई मोरे बालमुआ ॥ ५ ॥ अयोध्या गाजीपुर
हरद्वार, पटना गया कूचबिहार । मदरास से खबर
आई मोरे बालमुआ ॥ ६ ॥ सङ्ग में जुलूस कई हजार

जाके नमक करें तैयार । नमक शहर में बिकाई
 मोरे बालमुआ ॥ ७ ॥ दूटत देख नमक कानून,
 खौला नौकरशाही का खून । डण्डा गोली को
 चलाई मोरे बालमुआ ॥ ८ ॥ नेता बड़े बड़े थे धरके
 जेल में भेजा मोटर भरके । माल सब कुडुक कराई
 मोरे बालमुआ ॥ ९ ॥ जेल में पहुँचे कई हजार
 गोली के कितने हुये शिकार । धन वीर तेरी वीर-
 ताई मोरे बालमुआ ॥ १० ॥ रोज होता यही हाल
 भारत होय गया कङ्काल । ख्याल अब प्रभुनारायन
 कराई मोरे बालमुआ ॥ ११ ॥



चार आने का टिकट भेजकर मँगा लीजिये १६ पुस्तकें ।

गुज़लियात दिलबहार	⇒)	१) रुपये की पुस्तकें । आने में भेजी जावगी ।	भजन रत्नाकर बड़ा	⇒)
गुज़लों का गजरा	)॥		भजन नौरत्न	)॥
गुज़ल बहार	)॥		भजन भण्डार	~)
गुज़ल पचीसी	)॥		भजन प्रभाती	~)
गुज़ल कौवाली	)॥		भजन रामायण	~)
गुज़ल गुलबहार	~)॥		भजन सरोवर	)॥
गुज़ल भण्डार	)॥		भजन रत्नाकर छोटा	)॥
गुज़ल गुलजार	~)॥		भजन मुक्तावली	⇒)

* रामायण मध्यम *

लीजिये "थोड़े दाम की कामरी आवै गाढ़े काम" सुन्दर छपाई और सस्ता दाम तिसपर ग्लेज कागज क्या ही सोने में सुगन्ध है । मूल्य सिर्फ-- २)

शायरी बहार बड़ी	⇒)॥	का टिकट भेजकर मँगा लीजिये ।	चौताल चन्द्रिका	~)॥
सावन गुलशनार	)॥		चौताल चूड़ामणि	~)
सावन गुलदस्ता	)॥		चौताल चित्तविलास	~)
सावन का सुगना	)॥		चौताल चिन्ताहरण	~)
सावन की काली घटा	)॥		चौताल पचीसी	~)
सावन की छमकती परी	~)		चौताल मनमोहन	~)
सावन की तड़पती बिजली	)॥		चौताल बसन्त	~)
रंगीला सावन	)॥		चित्रकूट महात्म्य	⇒)

हर प्रकार की पुस्तक मिलने का पता--

पं० प्रभुनारायण मिश्र, स्टेशन रोड, गया ।
और दशाश्वमेध, बनारस सिटी ।